Reg. No. 694/2009-10 Impact Factor : 6.375 ISSN : 2250-1193

Anukriti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 13, No. 4 Year-12 April, 2023

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Vijay Bahadur Singh
Head, Hindi Department
Dean, Faculty of Arts
Banaras Hindu University
Varanasi

Editor
Dr. Ramsudhar Singh
Ex Head, Department of Hindi
Udai Pratap Autonomous College
Varanasi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI (U.P.), INDIA
Mob. 9415388337, E-mail : anukriti193@rediffmail.com, Website : anukritijournals.com

अनुक्रमणिका

	Illustration of 'Disabled Women Protagonists' in Hindi Cinema **Dr. Medhavi**	1-12
	Impact of use of Blended Learning on Academic Achievement by Senior Secondary Students **Phool Chand Yadav**	13-16
	ग्रामीण स्वास्थ्य पर पर्यावरण का प्रभाव : एक अध्ययन **डॉ0 अमिता तिवारी**	17-20
	भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका **डॉ0 दिव्या सिंह**	21-22
	सिनेमा इतिहास लेखन के स्रोत के रूप में : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन **सूरज सिंह**	23-26
	भारत के स्वतंत्रता संग्राम में समाजवादी विचार : एक ऐतिहासिक अनुशीलन **मनोज कुमार**	27-29
	उद्यमशीलता में महिलाओं की भागीदारी : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **दिव्या झा**	30-32
	शैक्षणिक परिवर्तन में सोशल मीडिया की भूमिका (ऑनलाइन क्लास के विशेष सन्दर्भ में) **डॉ0 मनीषा देवी**	33-36
	मानवाधिकार व सूचना का अधिकार **सत्येन्द्र कुमार महान एवं डॉ0 इफ्तिखार हसन**	37-38
	यमदीप उपन्यास में किन्नर समाज का यथार्थ **नाज़मा हाशमी**	39-42
	लचीलापन और वृद्धजन (वाराणसी जनपद पर क्षेत्र आधारित समाजशास्त्रीय अध्ययन) **डॉ0 रीता जायसवाल**	43-47
	उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक अभिरूचि का अध्ययन **चन्द्रशेखर**	48-52
	जैन साहित्य में शैली शब्द का प्रयोग और उसके निहितार्थ **डॉ0 संजय कुमार जैन**	53-58
	मलिन बस्तियाँ अनुसूचित जातियों की पूरक : एक अभिशप्त जीवन **डॉ0 विकास बंसल**	59-63
	शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण **डॉ0 प्रभाकर सिंह**	64-66
	"Right to be Forgotten": Does the Right to be Forgotten Come Under the Preview of Fundamental Right **Zakiya Ansari**	67-72

☐	Effectiveness of Online Education **Dr. Vineeta Singh & Dr. Mintu**	73-77
☐	सेवासदन : भारतीय स्त्री का कल, आज और कल **निवेदिता**	78-80
☐	Components of Gross Value Added in India during 1958-2021: A Dummy Variable Analysis **Dr. Pragyesh Nath Tripathi**	81-86
☐	Prostitution in India: Evolution and Legality **Mahesh Kumar Pandey**	87-92
☐	Social Limitations and Vulnerabilities in Agricultural Practices of Saidpur Block in Ghazipur District, U.P. **Vinod Kushwaha & Dr. Md. Nazim**	93-98
☐	दलित आत्मकथा की नींव : मैं भंगी हूँ **डॉ0 प्रणव कुमार गौरव**	101-102
☐	वृद्धजनों की सामाजिक सुरक्षा : सरकारी प्रयासों के विशेष सन्दर्भ में **अंजली द्विवेदी एवं डॉ0 ज्योति उपाध्याय**	103-106
☐	नाथ परम्परा और उनका साहित्य **डॉ0 अरुण प्रसाद रजक**	107-110
☐	Sustainable Water Resource Management and the Law in India **Dr. Dhiraj Kumar Mishra**	111-120
☐	21वीं सदी की हिन्दी महिला कथाकारों के कथा साहित्य में नारीवादी चिंतन का विश्लेषणात्मक अध्ययन **पल्लवी गुप्ता**	121-124

Reg. No. 694/2009-10 Impact Factor : 6.375
Anukriti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 13, No. 4, April 2023 ISSN : 2250-1193

नाथ परम्परा और उनका साहित्य

डॉ. अरुण प्रसाद रजक
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, गोरुबथान गवर्नमेंट कॉलेज, कलिम्पोंग

प्रत्येक धार्मिक विचारधारा में युगानुरूप परिवर्तन होता ही है | सिद्धों के साधना में भी नाथों ने आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया | इन्होंने सदाचार, संयम, योग, साधना पर सर्वाधिक बल दिया | सिद्ध निरीश्वरवादी बौद्धपरम्परा में हैं किन्तु नाथ संप्रदाय शैव धर्म से अनुप्राणित होने के कारण शून्य में शिव और शक्ति का प्रकाश देखते हैं | यही शून्य 'अलख निरंजन' आदि नामों से नाथपंथ में प्रचलित था | शिव ही नाथ सम्प्रदाय के आराध्य हैं | नाथ पंथ की दार्शनिकता सैद्धांतिक रूप से शैव मत के अंतर्गत है और व्यावहारिकता की दृष्टि से हठयोग से संबंधित है | भाव यह है कि धीरे-धीरे बौद्ध धर्म महायान, व्रजयान, सहजयान के रास्ते चलकर नाथपंथ में विकसित हुआ | डॉ० रामकुमार वर्मा के अनुसार- "नाथ संप्रदाय को सिद्ध सम्प्रदाय का विकसित और शक्तिशाली रूप ही समझना चाहिए | सिद्धों की विचारधारा और रूपकों को लेकर ही नाथ वर्ग ने उसमें नवीन विचारों की प्रतिष्ठा की |"[1] राहुल सांकृत्यायन ने भी सिद्ध साहित्य के विकसित रूपक को ही नाथ साहित्य कहा है |[2]

सिद्धों के आगे की परम्परा 'नाथपंथ' के नाम से प्रसिद्ध है | नाथों के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी का एक स्रोत लामा तारानाथ का इतिहास भी है, इसकी संक्षिप्त जानकारी डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'तांत्रिक बौद्ध साधना और साहित्य' में परिशिष्ट में दी गयी है | वहाँ से पता चलता है कि गोरखनाथ ने बारह योगी मतों का समन्वय किया था |[3] डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय ने राजगुरु योगिशंकर की नाथ सूचि को सर्वाधिक प्रमाणिक मानते हुए नवनाथों की सूचि इस प्रकार दी है- मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, जालंधरनाथ, कनीफानाथ, भर्तृहरीनाथ, गहिनीनाथ, रेवणनाथ, नागनाथ और चर्पटीनाथ |[4] नाथपंथ को मत्स्येन्द्रनाथ और गोरखनाथ ने चलाया था, जो चौरासी सिद्धों में गिने जाते हैं | इसलिए नाथों की उत्त्पति के बारे में खोज करते समय हमें अनिवार्य रूप से सिद्धों की परम्परा का अनुशीलन करना पड़ता है | 'पुरातत्व निबन्धावली' में महापंडित राहुल सांकृत्यायन गोरखनाथ का समय 9वीं शताब्दी अर्थात् महाराज देवपाल का राज्यकाल (809-849 ई.) मानते हैं और वे सरस्वती टेक्स्ट सिरीज़, बनारस की पुस्तक 'गोरक्ष सिद्धांत संग्रह' से उद्धरण देकर यह सिद्ध करते हैं कि नागार्जुन (16), गोरक्ष (9), चर्पट (59), कंथाधारी (69), जालन्धर (46), कण्हपा (कनीफानाथ 17) के नाम दिए गये हैं वो सिद्धों की सूची के ही हैं |[5]

इस तरह नवनाथों में जालंधरनाथ, गोरखनाथ, कानिफानाथ, चर्पटीनाथ और नागनाथ चौरासी सिद्धों में प्रमाणिक रूप से सम्मिलित हैं | तिब्बत में जालंधरिपा को आदिनाथ भी कहा जाता है | मत्स्येन्द्रनाथ के सिद्धत्त्व के बारे में विवाद है | राहुल जी के अनुसार मीनपा सिद्ध थे, जिनके पुत्र मत्स्येन्द्रनाथ नवनाथ में से प्रमुख हैं | वे मनाते हैं कि सिद्धों में मीनपा हुए जो आसाम (कामरूप) से आये थे और अपने पुत्र मत्स्येन्द्र के साथ चर्पटीपा के शिष्य बने |[6] अर्थात् मीनपा और मत्स्येन्द्रनाथ दो अलग- अलग व्यक्तित्त्व हैं | मीनपा के गुरु चर्पटीपा थे तो डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल के आधार पर राहुल सांकृत्यायन जालंधरिपा को मत्स्येन्द्रनाथ का गुरु मानते हैं, जिनके शिष्य गोरखनाथ हुए |[7] किन्तु हजारी प्रसाद द्विवेदी मानते हैं कि मीनपा और मत्स्येन्द्रनाथ एक ही व्यक्ति हैं |[8] इस तरह मत्स्येन्द्रनाथ के बारे में विवाद है | किन्तु नेपाल में मत्स्येन्द्रनाथ को सिद्धों के रूप ही सम्मान दिया जाता है | परम्परागत ढंग से चली आई निष्ठा के आधार पर मत्स्येन्द्रनाथ भी सिद्ध पुरुष माने जाते हैं तो मीनपा को मत्स्येन्द्रनाथ मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए |[9]

जालंधरनाथ के दूसरे प्रसिद्ध शिष्य कण्हपा जो नाथों में कनीफानाथ हैं- कर्णाटक से बिहार आकर बौद्ध भिक्षुक बने, वे पाल राजवंशी देवपाल के समय में सोमपुरी बिहार में रहते थे | सिद्धों की सूची में जालंधरपा का नाम 46वें स्थान पर है जबकि उनके शिष्य कण्हपा का स्थान 17वां और गोरक्षपा तथा मीनपा

का स्थान क्रमश: 9वां और 8वां है | सिद्धों में नागार्जुन जो सरहपा के शिष्य बताये गये हैं- वही नाथों में नागनाथ हैं | चर्पटी और चौरंगी का नाम भी सिद्धों में गिना गया है | चौरंगीनाथ की गिनती नवनाथों में भले न हो, किन्तु वे नाथपंथ में सम्मानित नाथ माने जाते हैं | उसी तरह राजा गोपीचंद जो बाद में गोपीचंदनाथ नाम से जाने गयें, सम्मानित नाथ योगी होने के बावजूद नवनाथ की श्रेणी में नहीं हैं | हाँ, राजसी वैभव छोड़कर संन्यासी बने भर्तृहरि की गिनती नवनाथों में होती है | नाथों में गहिनीनाथ की परम्परा में ही प्रसिद्ध संत ज्ञानेश्वर हुए जिनके प्रति महाराष्ट्र में आज भी घर- घर में श्रद्धा प्रकट की जाती है | नाथों के द्वारा रचित साहित्य को 'नाथ साहित्य' कहा गया | इनका समय 9 वीं से 14वीं शताब्दी तक फैला हुआ है | नाथों का साहित्य जनमानस को योग की शिक्षा, जनकल्याण तथा जागरूकता प्रदान करने के लिए था | नवनाथों का साहित्य निम्नलिखित हैं :-

1. मत्स्येन्द्रनाथ या मच्छन्द्रनाथ : इनके ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं | आचार्य अभिनवगुप्त ने इनके नाम का उल्लेख अपनी प्रसिद्ध कृति 'तन्त्रालोक' में किया है | ये 11वीं सदी के नाथ साधक थे | इनकी प्रसिद्ध कृति 'कौलज्ञान निर्णय', 'कुलानंद', 'ज्ञानकारिका' और 'अकुल-वीरतंत्र' हैं | ये ग्रन्थ संस्कृत में हैं, अत: हिंदी साहित्य के आदिकाल के लिए इनका ग्रन्थ नहीं, इनकी परम्परा ही उल्लेखनीय है |

2. गोरखनाथ : गोरखनाथ के नाम से संस्कृत एवं हिंदी में अनेक रचनाएँ उपलब्ध हैं| मिश्रबंधुओं ने सर्वप्रथम गोरखनाथ के 9, आचार्य शुक्ल ने 12, द्विवेदी ने 28 संस्कृत और 40 हिंदी के ग्रंथों का ज़िक्र किया है | हिंदी में 'गोरखबानी' गोरखनाथ की रचना मानी जाती है | 'गोरखबानी' का विद्वत्तापूर्ण और बढ़िया संकलन अब तक डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल का है, जिसे उन्होंने सन् 1942 में तैयार किया था | पांडुलिपि के रूप में भी बहुत- सी गोरखबानी उपलब्ध हुई है खासकर राजस्थान से| पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने 'गोरखबानी' नाम से गोरखनाथ के हिंदी के प्रमुख 13 ग्रंथों का प्रमाणिक संकलन संपादित किया है तथा परिशिष्ट में हिंदी के अन्य 14 ग्रंथों को भी सम्मिलित कर लिया है, जो इस प्रकार है- सबदी, पद, सिष्यदर्शन, गोरक्ष- कल्प, गोरक्ष- संहिता, गोरक्ष- शतक, गोरक्ष- गीता, गोरक्ष- शास्त्र, ज्ञानप्रकाश- शतक, ज्ञानामृतयोग, महार्थ मंजरी, योग चिन्तामणि, योग मार्तण्ड, योग पद्धति सिद्धांत, हठयोग संहिता आदि |

3. जालंधरनाथ : इनका नाम जालंधरपा, ज्वालेन्द्रनाथ भी मिलता है | 'पुरातत्त्व निबंधावली' में राहुल जी ने इनके एक गीत का संकलन किया है | डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी की 'नाथ सिद्धों की बानियाँ' में इनके हिंदी पदों का संकलन है |

4. कानिफानाथ : सिद्धों में यही कण्हपा, कृष्णपा या कृष्णपाद हैं | वे चौरासी सिद्धों में अपनी विद्या और कबित्त की दृष्टि से बड़े सिद्धों में गिने जाते हैं | 'नवनाथ चरित' से पता चलता हैं प्रभाव और विद्वता की दृष्टि से कानिफानाथ और गोरखनाथ में प्रतिद्वंदता रही है | 'नाथ सिद्धों की बानियाँ' में इनके हिंदी पदों का संकलन है |

5. भर्तृहरीनाथ : इन्हें भरथरीनाथ या विचारनाथ भी कहा जाता है | 'नाथ सिद्धों की बानियाँ' में इनकी वाणियाँ उपलब्ध हैं |

6. गहिनीनाथ : इनका समय 13वीं सदी है | ये गोरखनाथ के शिष्य हैं | 'नाथ सिद्धों की बानियाँ' में इनके पद मिलते हैं |

7. रेवणनाथ : इनकी सबदी तथा हिंदी की कतिपय वाणियाँ 'नाथ सिद्धों की बानियाँ' में मिलती है |

8. नागनाथ : सिद्धों में यही नागार्जुन (द्वितीय) हैं | 'नाथ सिद्धों की बानियाँ' में इनके पद मिलते हैं |

9. चर्पटीनाथ : चर्पटीपा या चर्पटनाथ की कविताएँ 'नाथ सिद्धों की बानियाँ' में मिलती हैं |

इन नौ नाथों के अतिरिक्त और नाम भी मिलते हैं, जैसे चुण्करनाथ, चौरंगीनाथ, गोपीचंदनाथ, घोड़ाचली आदि भी सामान्यत: नाथ परम्परा में चर्चा के विषय रहे हैं | इनकी वाणियाँ भी 'नाथ सिद्धों की बानियाँ' में उपलब्ध हैं | वस्तुतः इन सभी कवियों ने अपनी रचनाओं में गोरखनाथ के प्रवृत्त भावों का ही अंकुरण किया है |

गोरखनाथ से पूर्व उत्तर भारत राजनीतिक रूप से जहाँ विभिन्न टुकड़ों में बंटा था, वहीं धार्मिक दृष्टि से भी उस समय अनेक मान्यताएं-परम्पराएं व्याप्त थीं | गोरखनाथ ने अनेक पंथ को न केवल प्रभावित किया बल्कि अपने नाथ पंथ की ओर आकर्षित भी किया | फलतः शैव, शाक्त, बौद्ध, जैन तथा वैष्णव के साथ अनेक संप्रदाय का विलय उनके नाथपंथ में होता जा रहा था | गोरखनाथ ने तत्कालीन युग में व्याप्त अनेक मतभेदों को अतिक्रमण कर देश को धार्मिक एकसूत्रता में पिरोने का महत्त्वपूर्ण कार्य भी किया | नागेन्द्रनाथ उपाध्याय के मुताबिक गोरखनाथ के कालजयी प्रभाव के पीछे उनकी समन्वयात्मक दृष्टि है कि उन्होंने बारह योगी मतों का समन्वय किया |[10] डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में- "शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ | भारतवर्ष के कोने-कोने में उनके अनुयायी आज भी पाये जाते हैं | भक्ति आंदोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आंदोलन गोरखनाथ का भक्तिमार्ग ही था | गोरखनाथ अपने युग के सबसे बड़े नेता थे |" [11]

उनके कुछ पद्य देखिए-

क) "चार पहर आलंगन निद्रा, संसार जाई विषिया बाही |
उभय बांह गोरखनाथ पुकारै, मूल म हारौ म्हारा भाई ||"[12]

ख) "वांमां अंगे सोईबा जमचा भोगबा, संगे न पीवणा पांणी |
इमतौ अजरांवर होइ मछींद्र, बोल्यौ गोरख बांणी ||"[13]

ग) "छांटै तजौ गुरु छांटै तजौ लोभ मोह माया |
आत्मां परचै राखौ गुरुदेव सुदंर काया ||"[14]

घ) "एतैं कछु कथीला गुरु, सर्वै भैला भोलै |
सर्ब कमाई खोईला गुरु, बाघ नी चै बोलै ||"[15]

ङ) "हबकि न बोलिबा, ठबकि न चालिबा धीरै धरिबा पावं |
गरब न करिबा सहजै रहिबा भणत गोरख रावं ||"[16]

च) "हसिबा खेलिबा गाइबा गीत | दिढ़ करि राखि आंपना चीत ||"[17]

छ) आसण पवन उपद्रह करैं | निसदिन आरंभ पचि-पचि मरैं ||"[18]

गोरखनाथ ने किस प्रकार सन्मार्ग का प्रचार सर्वसाधारण में किया, इसका प्रमाण उनका धर्म और उनकी वे रचनाएँ हैं जिनमें लोक-हितकारी शिक्षाएँ भरी पड़ी हैं | उनकी रचनाओं में योग सम्बन्धी बहुत-सी बातें पाई जाती हैं | गोरखनाथ की महत्ता इतनी प्रभावशालिनी थी कि उन्होंने अनाचार में निमग्न अपने गुरु मत्स्येन्द्रनाथ (मछंदरनाथ) का भी उद्धार किया | जो पद्य ऊपर उद्धृत किये गये हैं, उनमें से पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे पद्यों को देखने से यह ज्ञात हो जायेगा कि उन्होंने किस प्रकार अपने गुरु को सांसारिक माया से बचने की शिक्षा दी | वे कहते हैं कि रात के चारों पहर आलिंगन और विषयवासना से अपना शुक्र मत गवाओ | माया के साथ पानी पीने से भी परहेज करो | हे गुरु ! मोह- माया छोड़कर आत्मपरिचय रखो जिससे ये सुन्दर काया नष्ट न हो | उन्होंने आत्मपरिचय और आत्म-अजर होने का मार्ग बड़े सुन्दर शब्दों में बतलाया और गुरु में आत्मग्लानि उत्पन्न करने की चेष्टा भी की, जैसा तीसरे और चौथे पद्य के देखने से प्रकट होता है | उनका यह उद्योग अपने गुरु के विषय में ही नहीं देखा जाता | सर्वसाधारण पर भी उनकी शिक्षाओं ने प्रभाव डाला | उनके पांचवें, छठवें, सातवें पद्यों में मनुष्य की दिनचर्या, सहज भावना और मध्यम मार्ग की शिक्षाएँ हैं जिसे सन्मार्ग के पथिकों को ग्रहण करना चाहिए | हिन्दी साहित्य में नैतिक धार्मिक शिक्षाओं के आदि प्रचारक भी गोरखनाथ हैं |

सन्दर्भ-सूचि :

1. वर्मा, डॉ० रामकुमार, 'हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास', रामनारायण लाल, प्रयाग, तृतीय संस्करण, 1954, पृष्ठ-143
2. सांकृत्यायन, राहुल, 'पुरातत्व निबन्धावली', इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, 1937, पृष्ठ-161

3. उपाध्याय, नागेन्द्रनाथ, 'गोरक्षनाथ : नाथ संप्रदाय के परिप्रेक्ष्य में', नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण, संवत् 2033, पृष्ठ-86
4. उपाध्याय, नागेन्द्रनाथ, 'तांत्रिक बौद्ध साधना और साहित्य', नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण, संवत् 2015, पृष्ठ-209
5. राहुल, 'पुरातत्व निबन्धावली', इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, 1937, पृष्ठ- 162
6. वही, पृष्ठ-164
7. वही, पृष्ठ-183
8. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, 'नाथ सिद्धों की वानियाँ', नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत् 2035, पृष्ठ-7
9. मौर्य, देवीप्रसाद, 'सहज- समागम', रोशनाई प्रकाशन, कंचरापाड़ा, प्रथम संस्करण, 2008, पृष्ठ-129
10. उपाध्याय, नागेन्द्रनाथ, 'गोरक्षनाथ : नाथ संप्रदाय के परिप्रेक्ष्य में', नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण, संवत् 2033, पृष्ठ-86
11. द्विवेदी, डॉ० हजारी प्रसाद, 'नाथ सम्प्रदाय', हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद, 1950, पृष्ठ-58-59
12. बड़थ्वाल, पीताम्बर दत्त, 'गोरखबानी', हिंदी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग, प्रथम संस्करण, 1999 वि., पृष्ठ-85
13. वही, पृष्ठ-86
14. वही, पृष्ठ-87
15. वही, पृष्ठ-87
16. वही, पृष्ठ-11
17. वही, पृष्ठ-3
18. वही, पृष्ठ-47